डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय
डॉ. अंबेडकर नगर, महू (इंदौर) म. प्र.
अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2020
रिपोर्ट

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, महू के जेंडर स्टडीज विभाग द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस सप्ताह के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। महिला सशक्तिकरण, जेंडर समानता, जेंडर संवेदनशीलता जैसे केंद्रीय मुद्दों को लेकर यह कार्यक्रम आयोजित किए गए। विवरण निम्नानुसार है।

- **राष्ट्रीय संगोष्ठी** (04-05 मार्च, 2020)

  विषय- **महिला सशक्तिकरण: परम्पराओं के ना म पर कुरीतियाँ**

  दो दिवसीय यह संगोष्ठी कुल पाँच सत्रों में आयोजित की गयी जिसमें से एक समानांतर सत्र भी शामिल है।

प्रस्तावना

विश्व में जाने कितनी कुप्रथाएँ और कुरीतियाँ हैं जिनसे महिलाएं अपने दैनिक जीवन में प्रताड़ित हो रही हैं। न सिर्फ शारीरिक रूप से बल्कि मानसिक व भावनात्मक रूप से भी ऐसी परंपराओं के नाम पर फैली कुप्रथाओं के चलते महिलाओं को सामाजिक गैरबराबरी, छुआ-छूत सहित कई बार स्वास्थ्य संबंधी मुश्किलों का भी सामना करना पड़ता है। भारतीय उपमहाद्वीप के विविधतापूर्ण सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश और धार्मिक मान्यताओं, जीवन पद्धतियों के दरमियान तमाम सारी अच्छाइयों के साथ-साथ हमारे रोज-मर्रा के रहन-सहन, खान-पान, रीति-नीति जैसे मसलों पर आज भी हम कथित परंपराओं के नाम पर जाने-अनजाने लैंगिक विभेद को बढ़ावा देते हैं जिससे सीधे तौर पर महिलाएं प्रभावित होती हैं, जबकि हम बहुत हद तक सभ्य, शिक्षित, वैज्ञानिक और तकनीकी के स्तर पर बहुत आगे निकल चुके हैं। गौरतलब है कि महिला-पुरुष अथवा किसी अन्य लैंगिक पहचान का होना किसी व्यक्ति की जैविक स्थिति हो सकती है जिसका कि एक स्त्री अथवा पुरुष के बतौर सामाजिक स्थिति, जिम्मेदारी, उत्तरदायित्व, अच्छे-बुरे, श्रेष्ठ-निम्न जैसी गढ़ी गयी खांचेबंदियों में फिट कर दिये जाने का कोई वाजिब तर्क नहीं बनता।

सदियों से चली आ रही गैर-बराबरी पूर्ण ढंग से गढ़ी गयी कुप्रथाजनित मान्यताओं/विश्वासों ने महिलाओं के हौसले, उनकी क्षमताओं, गैर-बराबरी से परे एक व्यक्ति होने के विश्वासों को बार-बार चुनौती दी है। महिला विरोधी परम्पराएं, कुप्रथाएँ, विचार एक पीढ़ी से दूसरी की ओर बहुत ही आसानी से खिसकती जाती हैं। पुरुष प्रधान समाज में फैली ज्यादातर कुप्रथाएं महिलाओं पर अन्याय और दोयम दर्जे के व्यवहार को ही बढ़ावा देने वाली हैं। ऐसी परम्पराएँ न सिर्फ भारतीय संदर्भों में बल्कि दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में किसी न किसी रूप में परिलक्षित होती आई हैं। मसलन जरूरत जेंडर संवेदनशीलता की है ताकि पितृसतात्मक रूढ़िवादी सामाजिक सोच को वैज्ञानिकता और तार्किकता की कसौटी वाले दायरे में तब्दील किया जा सके। हमारे समाज में परंपराओं के नाम पर फैली जड़ कुप्रथाओं को समाप्त किए बगैर महिला सशक्तिकरण की बात संभव नहीं हो सकती। शासन-प्रशासन द्वारा भी ऐसी कुरीतियों के खिलाफ विभिन्न स्तर पर जागरूकता संबंधी कार्य किए जाते हैं। इस वर्ष के अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के ध्येय वाक्य को ध्यान में रखते हुए कहें तो, एक समान और सक्षम दुनिया के बनने में परंपराओं के नाम पर प्रचलित कुरीतियाँ भी एक गंभीर और प्रभावी अवरोधक हैं।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में 04-05 मार्च, 2020 को आयोजित किए जाने वाले इस राष्ट्रीय सेमिनार का मुख्य उद्देश्य स्वस्थ्य और गंभीर बहस के जरिये भारतीय संदर्भ में परंपराओं के नाम पर फैली कुरीतियों की व्यापकता को विभिन्न विद्वानों के शोध पत्रों, विचारों और अनुभवों के माध्यम से इन्हें समाप्त करने के सशक्त प्रयासों की ओर सामूहिक रूप से सैद्धांतिक एवं तर्कसंगत हल तलाशना है। परंपराओं के नाम पर फैली कुरीतियों, सामाजिक कुप्रथाओं के आलोक में देश भर के विद्वानों, अध्येयताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, महिलाओं सहित इन विषयों पर गंभीर और प्रगतिगामी शोध करने वाले शोधार्थियों/विद्यार्थियों को उनके शोध-पत्रों सहित महत्वपूर्ण विचारों-सुझावों के साथ आमंत्रित करते हैं ताकि ग्रामीण-शहरी, आदिवासी बाहुल्य इलाकों में फैली ऐसी कुप्रथाओं, परंपराओं, मिथकों के खिलाफ जागरूकता लाई जा सके।

राष्ट्रीय संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य स्वस्थ्य और गंभीर बहस के जरिये भारतीय संदर्भ में परंपराओं के नाम पर फैली कुरीतियों की व्यापकता को विभिन्न विद्वानों के शोध पत्रों, विचारों और अनुभवों के माध्यम से इन्हें समाप्त करने के सशक्त प्रयासों की ओर सामूहिक रूप से सैद्धांतिक एवं तर्कसंगत हल तलाशना है। परंपराओं के नाम पर फैली कुरीतियों, सामाजिक कुप्रथाओं के आलोक में देश भर के विद्वानों, अध्येयताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, महिलाओं सहित इन विषयों पर गंभीर और प्रगतिगामी शोध करने वाले शोधार्थियों/विद्यार्थियों को उनके शोध-पत्रों सहित महत्वपूर्ण विचारों-सुझावों के साथ आमंत्रित किया गया था ताकि ग्रामीण-शहरी, आदिवासी बाहुल्य इलाकों में फैली ऐसी कुप्रथाओं, परंपराओं, मिथकों के खिलाफ जागरूकता लाई जा सके। दिनांक 04-05 मार्च 2020 को आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महिला सशक्तिकरण, जेंडर समानता और जेंडर संवेदनशीलता की दिशा में कार्य करने वाले विद्वान, शोधार्थी, सामाजिक कार्यकर्ता संबंधित विषय पर अपने शोध परक वक्तव्यों को रखने हेतु उपस्थित हुए। और इस दिशा में एक स्वस्थ्य बहस होने के साथ सामाजिक समरसता एवं जेंडर समानता की दिशा में कार्य करने हेतु कुछ जमीनी हकीकतों को भी सामने लाया जा सका।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि के तौर पर प्रसिद्ध साहित्यकार और महिला मुद्दों से सरोकार रखने वाली साहित्य अकादमी पुरस्कार सम्मानित श्रीमती चित्रा मुद्गल, नई दिल्ली, विशिष्ट अतिथि के रूप में पद्मश्री जनक मगिलिगन पलटा, प्रो. पुष्पिता अवस्थी नीदरलैंड सहित अन्य विद्वान उपस्थित हुए। सत्र की अध्यक्षता डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय की कुलपति महोदया प्रो. शुक्ला ने की। बाह्य अतिथि निम्नानुसार हैं।

1. श्रीमती चित्रा मुद्गल, दिल्ली
2. प्रो. कुसुम कुमारी, मुंगेर विश्वविद्यालय
3. श्री भगवान प्रसाद खुनखुन, सूरीनाम
4. रामजी यादव, वाराणसी
5. पद्मश्री जनक पलटा, इंदौर
6. प्रो. पुष्पिता अवस्थी, नीदरलैंड
7. प्रो. विभूति पटेल, मुंबई
8. प्रो. निशा शेंडे, अमरावती
9. डॉ. सुप्रिया पाठक, वर्धा
10. डॉ. धम्मसंगिनी, नागपुर
11. स्वातिजा परांजपे, मुंबई
12. सिराज बलसारा प्रभू, महाराष्ट्र
13. प्रो. सबीहा हुसैन, दिल्ली
14. श्री शरद जायसवाल, वर्धा
15. चंदा असानी, जयपुर
16. डॉ. सतीश पावड़े, वर्धा
17. अपर्णा, छत्तीसगढ़

18. डॉ. ममता कुमारी, रांची

आमंत्रित वक्ताओं के साथ-साथ देश के अलग-अलग विश्वविद्यालयों, संस्थाओं से जुड़े 20 से अधिक विद्यार्थी-

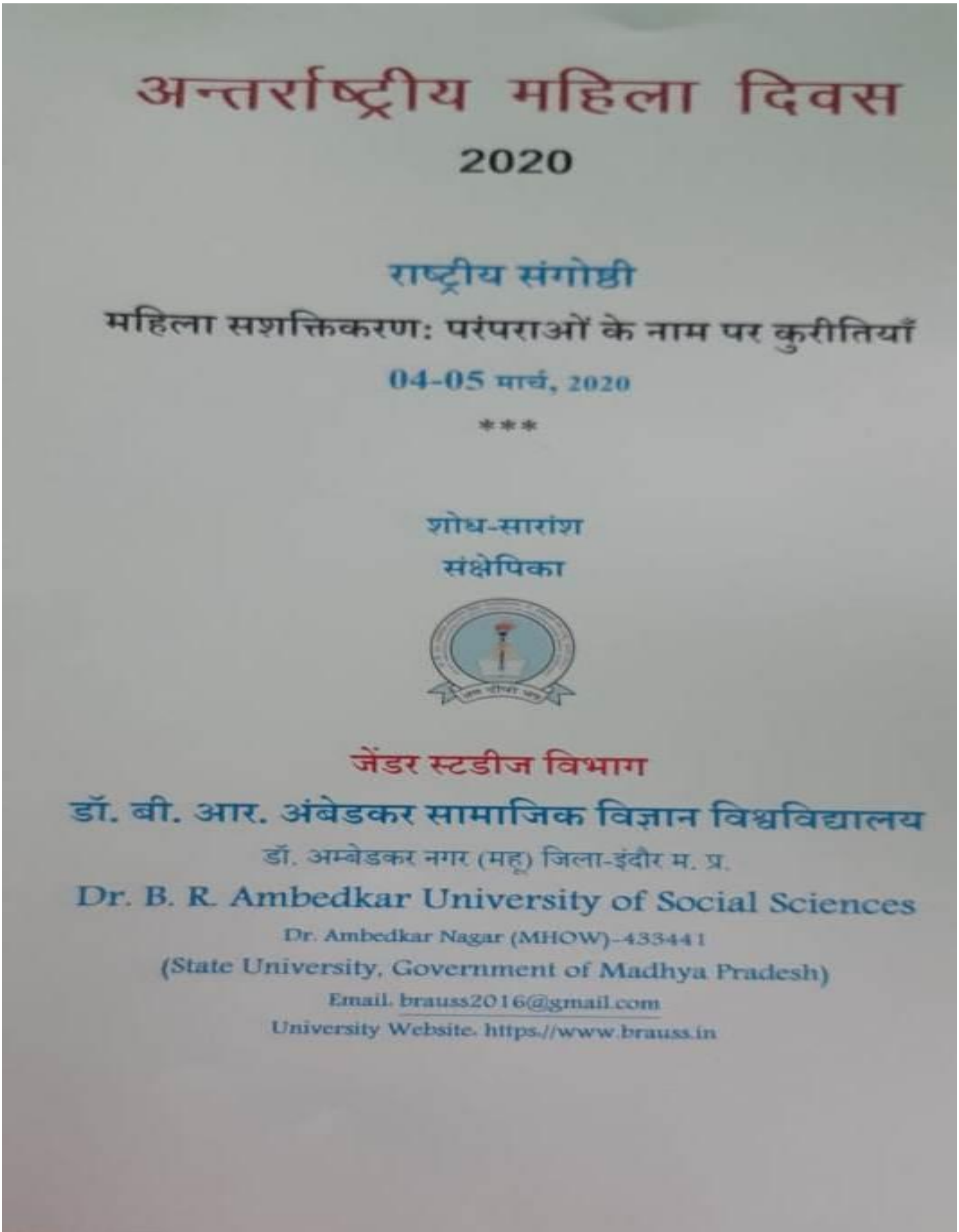

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस

2020

राष्ट्रीय संगोष्ठी

महिला सशक्तिकरण: परंपराओं के नाम पर कुरीतियाँ

04-05 मार्च, 2020

***

शोध-सारांश

संक्षेपिका

जेंडर स्टडीज विभाग

डॉ. बी. आर. अंबेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय

डॉ. अम्बेडकर नगर (महू) जिला-इंदौर म. प्र.

Dr. B. R. Ambedkar University of Social Sciences

Dr. Ambedkar Nagar (MHOW)-453441

(State University, Government of Madhya Pradesh)

Email. brauss2016@gmail.com

University Website. https.//www.brauss.in

शोधार्थियों ने संगोष्ठी के समानांतर सत्र में शोध पत्र पढ़े। राष्ट्रीय संगोष्ठी हेतु चयनित शोध पत्रों की शोध संक्षेपिका प्रकाशित की गयी जिसकी अनुक्रमणिका निम्नानुसार है-

महिला सशक्तिकरण: परंपराओं के नाम पर कुरीतियाँ

04-05 मार्च, 2020

अनुक्रमणिका

***

क्र.	विवरण		पेज सं.
I	माननीय कुलपति महोदया का शुभकामना संदेश		
II	प्रो. कुसुम कुमारी का संदेश		
III	डीन, प्रो. किशोर जॉन का संदेश		
IV	डीन, डॉ. मनीषा सक्सेना का संदेश		
V	प्रस्तावना वक्तव्य- कुसुम त्रिपाठी		
	संगोष्ठी कार्यक्रम विवरण		
	महिला सशक्तिकरण की मिशाल: पूनम श्रोति		
	संगोष्ठी-पत्र का शीर्षक		
1.	विधवा स्त्रियां : सामाजिक सरोकार	प्रो. आशा शुक्ला	1
2.	चुड़ैल और डायन प्रथा : एक स्त्रीवादी नजरिया	सिराज बलसारा प्रभु	2
3.	छत्तीसगढ़ से नहीं मिटा टोनही का अभिशाप	तुहिन देब	3
4.	देवदासी प्रथाः नया राज्य, नये कानून और पुरानी परंपरा	स्वातीजा	4
5.	स्त्री ही डायन क्यों करार दी आती है !	अपर्णा	6
6.	All That Glitters Is Not Gold	Chanda Asani	7
7.	डायन प्रथा का मकड़जाल: कुरिति एवं महिला सशक्तिकरण	मनीषा सक्सेना	8
8.	महिला सशक्तिकरण की चुनौतियां: वर्जनाएं एवं कुरीतियां	डॉ. सुप्रिया पाठक	10
9.	स्त्री सशक्तिकरण के दावे और 'कुमारी मातायें'	शरद जायसवाल	11
10.	केरल की महिलाओं का ब्लाउज पहनने के लिए संघर्ष	कुसुम त्रिपाठी	12
11.	संथाल जनजाति में महिलाओं का स्थान	ममता कुमारी	14
12.	पंजाब में द्रौपदी विवाह का प्रचलन कूदेसन प्रथा की एक नारीवादी विवेचना	गुरपिन्दर कुमार	15

13.	वर्जनाओं और मिथकों से घिरा मासिक धर्म	डॉ. रश्मि जैन	16
14.	महिलाएं और मंदिर प्रवेश	डॉ. मनोज कुमार गुप्ता	17
15.	सामाजिक कुरीतियाँ	डॉ. भारती गीते	18
16.	Empowerment of Women in India: A Critical Analysis with special reference to Socio-Cultural Status of Women	Bharat Bhati	19
17.	चीनी महिलाओ के जीवन की त्रासदी पैर बाधने की कुप्रथा	डॉ. मोनिका यादव	20
18.	भारतीय समाज में “कन्यादान” की परंपरा: स्त्रीवादी टिप्पणी	डॉ. आकांक्षा	22
19.	औपनिवेशिक भारत एवं वर्तमान भारत में महिलाओं से सम्बन्धित परम्परा कुरीतियाँ और / उनका समाधान	डॉ आंशू	24
20.	महिलाओं की दयनीय स्थिति का एक समाजशास्त्रीय	मूल्यांकन: दहेज के विशेष सन्दर्भ में	25
21.	बदलती नारी की दशा और ‘कठगुलाब’	वंदना पाण्डेय	26
22.	The Identity dilemma of Kashmir’s Half-Widows in the Neo-Liberal Political World.	Dr. Vikas Bhandari and Dr. Yamini Raut	27
23.	दहेज परंपरा और संभ्रांत बुद्धिजीवी समाज	राजलक्ष्मी	28
24.	महिला सषक्तिकरण के मार्ग में बाधक परम्परायें एवं कुरीतियां‘‘	डॉ. धर्मेंद्र सिंह चौहान	29
25.	उज्जैन जिले की बड़नगर तहसील के संदर्भ में अध्ययन	अदिति जोशी	30
26.	सामाजिक कुरितियों के कारण मासिक धर्म के प्रति किशोरियों के व्यवहार में परिवर्तन: एक अध्ययन	डॉ. कपिल खरे	31
27.	मासिक धर्म को लेकर प्रचलित कुप्रथाएं एवं परम्पराएं	दीपमाला रावत	32
28.	समाजिक कुरीतियों पर सोशल मीडिया एवं सोशल नेटवर्किंग का प्रभाव	किरण राय परिहार	34
29.	महिला सषक्तिकरणः परंपराओं के नाम पर कुरीतियाॅं	दीपिका	35
30.	महिला सषक्तिकरण के दौर में सामाजिक मान्यताओं के कारण अनुसूचित जाति वर्ग की शोषित, पीड़ित महिलाओं की स्थिति	सुरेन्द्र कुमार अहिरवार	36

31.	समाज में कन्या भ्रूण हत्या एक कुरिति	सरिता देवी	37
32.	महिला सषक्तिकरण: स्वच्छता एवं स्वास्थ्य	सपना मोरे	38
33.	महिला सशक्तिकरण : परंपराओं के नाम पर कुरीतियाँ	रश्मि वाजपेयी	39
34.	परंपराओं के नाम पर कुरीतियाँ	प्रदन्या मेश्राम	40
35.	महिला सशक्तिकरण में मलिन बस्तियों में निवासरत महिलाओं की स्थिति	देवकी अहिरवार	42
36.	कमला के सिनेमाई रूपांतरण में चित्रित कुरियियाँ	राजेश अहिरवार	43
37.	भारतीय समाज में महिलाओं के मासिक धर्म के प्रति मिथक धारणाएं एवं उनका प्रभाव	पुष्पा भामदरे	44
38.	भारत वर्ष में महिलाओं के साथ हो रही परमपराओं के आधार पर कुरीतियों का मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का समीक्षात्मक अध्ययन	अरमान अली	45
डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, महू की उपलब्धियां			

उद्घाटन सत्र- 04/03/2020

महिला सशक्तिकरण: परम्पराओं के नाम पर कुरीतियाँ विषय संगोष्ठी का उद्घाटन 04 मार्च 2020 को संकाय भवन के सेमिनार हॉल में हुआ। उद्घाटन सत्र की मुख्य अतिथि श्रीमती चित्रा मुद्गल, विशिष्ट अतिथि पद्मश्री जनक पलटा महोदया, बीज वक्ता के रूप में नीदरलैंड से प्रो. पुष्पिता अवस्थी उपस्थित रहीं।

मुख्य अतिथि चित्रा मुदगल ने कहा कि आज भी स्त्री पुरूष के अहं के बोझ तले दबी हुई है। उन्होंने कहा कि सिर्फ एक परिवार या एक गांव में या एक कस्बे में महिला सशक्तिकरण के संबंध में बेहतर कार्य हो जाने का यह मतलब नहीं कि पूरी तरह से महिला सशक्तिकरण हो गया है। असल **में स्त्री ही हमारी पृथ्वी है, स्त्री ही सच्चा प्रेम है, स्त्री ही सहिष्णुता है, वही संवाद है**। वर्तमान संदर्भ में

उन्होंने कहा कि यदि हमें स्त्री को सशक्त बनाना है तो सबसे पहले हमें अपने घर में बेटियों को सशक्त बनाना होगा। उन्होंने परंपराओं ने नाम पर कुप्रथाओं को मानव विकास में बाधक बताते हुए ऐसे विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी के माध्यम से बात करने को बहुत ही सार्थक और तात्कालिक बताया। बतौर विशिष्ट अतिथि बोलते हुए पदमश्री जनक पलटा ने कहा कि 1972 से लेकर आज तक गांव से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जेंडर समानता की सिर्फ बातें हो रही है जबकि जेंडर समानता से ज्यादा जरूरी स्त्री पुरूष को एक साथ एक मंच पर लाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा एक समय में स्त्री से उसके निर्णय लेने की क्षमता को छीन लिया गया था, उन्हें डरा धमका कर रखा गया था। और आज समय के साथ इस कुरीति को बंद करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि स्त्री सशक्तिकरण और सामनता की लडाई में स्त्री और पुरूष दोनों की बराबर जिम्मेदारी की बात कही।

नीदरलैंड से आई प्रो. पुष्पिता अवस्थी ने वैश्विक परिप्रेक्ष्य में कुप्रथाएं समस्या और समाधान विषय पर बोलते हुए कहा कि स्त्री पुरूष दोनों एक समान हैं। दोनों को एक जैसा सम्मान देना चाहिए। उन्होंने कहा कि भारतीय परंपराएं ही भारतीय संस्कृति की जनक है, आने वाले समय में भारतीय संस्कृति ही वैश्विक संस्कृति बनेगी। लेकिन परंपराओं के नं पर कुप्रथाओं से बचना होगा। स्त्रियों की प्रकृति से तुलना करते हुए उन्होंने कहा कि प्रकृति की तरह ही स्त्री के अपने बंसत होते हैं, अपने रंग होते हैं अपनी भूमिका होती है। उन्होंने भारतीय स्त्री के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करते हुए कहा कि स्त्री से ही समाज का अस्तित्व है यदि स्त्री को समाज में बराबर का स्थान नहीं मिलेगा तो एक दिन यह समाज बिखर जायेगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहीं विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो आशा शुक्ला ने कहा कि महिलाओं का सिर्फ एक दिन नहीं होता बल्कि पूरे तीन सौ पैशठ दिन स्त्री के नाम होते हैं। उन्होंने इस बात पर जोर

दिया कि समस्त महिलाएं अच्छी नहीं है और समस्त पुरूष गलत नहीं है। केरल के दलित आंदोलन का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि जिस तरह से वहां के दलित समाज ने ब्लॉउज पहनने के लिए आंदोलन कर समाज में सभी वर्गों की स्त्रियों के सम्मान की लडाई लड़ी ठीक वैसे ही आज हर स्थान पर स्त्रियों के उत्थान के लिए कार्य होना चाहिए। उन्होंने कहा कि देवदासी प्रथा और इसके जैसे ना कितने नामों पर हो रहे अत्याचार से स्त्रियों को मुक्त कराने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि कोई धर्म या समाज इंसान से बड़ा नहीं होता। अब समय आ गया है कि सब बात पर विचार नहीं किया जाना कि अब तक क्या होता आया है बल्कि इस बात पर विचार होना चाहिए कि अब क्या बदलना है। आज के समय में हमें सबसे पहले अपने सामूहिक आचरण को बदलना होगा। विभिन्न समाज में फैली कुरीतियों का खात्मा करना होगा तभी सही मायनों में महिला सशक्तिकरण माना जायेगा। कार्यक्रम की संयोजक कुसुम त्रिपाठी ने कार्यक्रम की रूपरेखा बताते हुए भारतीय और वैश्विक समाज में स्त्रियों के प्रति फैली कुरीतियों और कुप्रथाओं पर प्रहार किया। उन्होंने डायन प्रथा के संदर्भ में बात करते हुए कहा कि यह गांव कस्बों में उन वर्चस्ववादी पुरूषों द्वारा किया जाने वाला अत्याचार है जिन्हें वो उन स्त्रियों के लिए उपयोग करते हैं जो उनके सामने झुकती नहीं है। उन्होंने देवदासी प्रथा से लेकर मुस्लिम महिलाओं के खतना प्रथा पर गहरा कटाक्ष किया। कार्यक्रम का संचालन ड़ॉ रश्मि जैन और धन्यवाद ज्ञापन डॉ मनोज गुप्ता ने किया।

पुस्तक लोकार्पण

अलगनी पर औरतें

संपादक -कुसुम त्रिपाठी

कुसुम त्रिपाठी द्वारा संपादित यह पुस्तक परंपराओं के नाम पर महिलाओं के खिलाफ होने वाली गैरबराबरी, हिंसा और दोयम दर्जे के व्यवहारों की पड़ताल करती है। अलग-अलग समाजों, परिवेशों में रह रही महिलाओं की कुप्रथाजनित चिंताओं चुनौतियों को सामने लाने के उद्देश्य से लिखी गयी यह पुस्तक अगोरा प्रकाशन से प्रकाशित हुई है।

दाहिने से प्रो. कुसुम कुमारी, प्रो. पुष्पिता अवस्थी, पद्म श्री जनक मगिलिगन पलटा, कुलपति प्रो. आशा शुक्ला, श्री रामजी यादव, श्रीमति चित्रा मुद्गल, कुसुम त्रिपाठी, अपर्णा, डॉ. मनोज कुमार गुप्ता

शोध संक्षेपिका का लोकार्पण

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर आमंत्रित शोध पत्रों की शोध संक्षेपिका का लोकार्पण किया गया।

दाहिने से प्रो. डी. के. वर्मा, प्रो. कुसुम कुमारी, प्रो. पुष्पिता अवस्थी, पद्म श्री जनक मगिलिगन पलटा, कुलपति प्रो. आशा शुक्ला, डॉ. मनोज कुमार गुप्ता, श्रीमति चित्रा मुद्गल, कुसुम त्रिपाठी

सावित्रीबाई फुले महिला सशक्तिकरण सम्मान

सम्माननीय पूनम श्रोति जी को सम्मानित करते हुए

सांस्कृतिक संध्या

सांस्कृतिक संध्या - नाट्य मंचन 'समर्पण'

दिनांक 04 मार्च 2020

महिला सशक्तिकरण: परम्पराओं के नाम पर कुरीतियां विषय पर 8 मार्च , 2020 अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय ,महू के तत्वाधान में 04 मार्च 2020 सायं को 6 बजे बुद्ध विहार में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। नाट्य मंचन 'समर्पण' की प्रस्तुति नटराज रंग समूह महू के द्वारा दी गई। कार्यक्रम का आरंभ तथागत गौतम बुद्ध एवं डॉ. अम्बेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलन के साथ किया गया। विश्वविद्यालय की कुलपति माननीय प्रो. आशा शुक्ला कार्यक्रम की अध्यक्ष, नीदरलैंड से उपस्थित प्रो. पुष्पिता अवस्थी एवं भगवान प्रसाद खुनखुन विशिष्ट अतिथि के रूप में, श्री मनोज तिवारी कुलसचिव भी उपस्थित रहे।

नाट्य मंचन 'समर्पण' के माध्यम से देवी अहिल्या बाई होल्कर के जीवन पर आधारित मंचन में सती प्रथा, पुत्र मोह, हस्तशिल्प, कुशल प्रशासन को संजीदगी से दर्शाया गया। कुलपति प्रो. आशा शुक्ला द्वारा उदबोधन में कहा गया कि देवी अहिल्या महिला सशक्तिकरण का सशक्त उदाहरण हैं। वर्तमान में भी वे प्रासंगिक हैं। कार्यक्रम प्रभारी डॉ. मनीषा सक्सेना द्वारा कार्यक्रम का संचालन एवं डॉ. भारती गीते द्वारा आभार व्यक्त किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के समस्त संकाय सदस्य, शोद्यार्थी , विद्यार्थी , कर्मचारी एवं महू के गणमान्य नागरिकों ने सहभागिता की।

कार्यक्रम के दौरान की कुछ छाया चित्रा

समापन सत्र

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित ''महिला सशक्तिकरण: परंम्पराओं के नाम पर कुरीतियाँ'' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. कुसुम कुमारी, प्रति कुलपति, मुंगेर विश्वविद्यालय, विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री भगवान प्रसाद खुनखुन एवं बीज वक्ता के रूप में श्री राम जी यादव मौजुद रहें। राम जी यादव ने सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था में स्त्रियों की प्रमुख भूमिका रही है, जो अतुलनीय है। आगे कहा कि परपंरा और संस्कृति के केंद्र में

स्त्री का महत्तवपूर्ण स्थान है। जब हम कुप्रथाओं की बात करते हैं तो नकारात्मक संस्कृति की बात भी आती है और इसके लिए सबल पुरूष की सबसे ज्यादा शिकार महिलाएं होती हैं। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुये प्रो. कुसुम कुमारी ने कहा कि हमें इस बात को समझने की जरूरत है कि हमारी परंपराए कब सुरक्षित होती हैं, कब हमारे गले का फंदा बन जाती हैं। इस समय सबसे ज्यादा जरूरत है कि हम अपनी परंपराओं को समय के साथ बदलें।

उन्होंने कहा आज हम इक्सवी सदी में हैं हमें वैज्ञानिक और तार्किक ढंग से इस पर विचार करना होगा। विशिष्ट अतिथि के तौर पर सूरीनाम से पधारे भगवान प्रसाद खुनखुन ने अपने वक्तत्व में परम्पराओं के नाम पर फैली कुरीतियों को जड़ से समाप्त करने के लिए महिला शिक्षा और राजनीतिक भागीदारी पर जोर देते हुए विधाई संस्थाओं में महिला आरक्षण का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि जो पढ़ा लिखा नहीं है वो सुरक्षित नहीं होगा। स्त्रियों के बिना यह दुनिया कभी शांतिप्रिय नहीं हो सकती। अध्यक्षीय उद्बोधन में विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो.

आशा शुक्ला ने कहा कि स्त्रियों की समस्या पूरे विश्व में एक जैसी है, उनकी एक ही जाति है, उन्होंने इस संगोष्ठी में शामिल सभी पत्रों एवं व्याख्यानों को व्यवस्थित कर एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने की बात कही और साथ ही इस संगोष्ठी के विस्तृत रिपोर्ट को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं तक पहुंचाने की बात भी कही। उन्होंने इस संगोष्ठी की सफलता के लिए बाह्य विशेषज्ञों, शोधार्थियों एवं आयोजन समिति को बधाई देते हुए यह आश्वासन दिया कि यह सिलसिला निरंतर आगे बढ़ता रहेगा। डीन प्रो. डी. के. वर्मा ने कहा कि इस संगोष्ठी ने विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्तर एक मजबूत मंच प्रदान किया है। एक समानांतर सत्र को शामिल करते हुए यह दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी कुल पांच सत्रों में आयोजित की गई। जिसमें अंतर्राष्ट्रीय स्तर से लेकर देश भर से आए विद्वानों एवं शोधार्थियों ने अपने महत्वपूर्ण शोध पत्र पढ़े। दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की संयोजक कुसुम त्रिपाठी एवं सह-संयोजक के रूप में डॉ. मनोज कुमार गुप्ता एवं डॉ. रश्मि जैन रहीं। इस अवसर पर प्रो. किशोर जॉन, डा. मनीषा सक्सेना, डा. कुसुम त्रिपाठी, प्रो. पुष्पिता अवस्थी, प्रो. शबीहा हुसैन सहित विश्वविद्यालय और विश्वविद्यालय के बाहर आये हुये प्रतिभागी और विद्वान उपस्थित थे। संचालन डा. ज्योति गौर, सत्रवार रिपोर्टिंग डा. मनोज गुप्ता और धन्यवाद ज्ञापन डा. रश्मि जैन ने की।

❖ **जेंडर संवेदनशीलता : एक समान दुनिया एक सक्षम दुनिया**

कार्यशाला (07-08मार्च, 2020)

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, महू द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस सप्ताह कार्यक्रम की कड़ी में राष्ट्रीय संगोष्ठी के बाद आज दो दिवसीय (07-08 मार्च, 2020) "जेंडर संवेदनशीलता : एक समान दुनिया एक सक्षम दुनिया" विषय पर कार्यशाला का उद्घाटन हुआ। कार्यक्रम में रिसोर्स पर्सन के रूप में एसएनडीटी मुंबई के फार्मेसी विभाग के पूर्व प्रोफेसर एवं एनएमआइएमएस कॉलेज नंदूरबाग के पूर्व प्राचार्य प्रो. रवींद्र रुक्मणी पंडरीनाथ तथा अनुराधा मोहिनी जो भाषाविद और महाराष्ट्र शासन में सह-भाषा संचालक के पद पर कार्य करते हुए बीच में वालण्टरी रिटायरमेंट लेकर बाल मनोविज्ञान, बाल मनोविकास और जेंडर संवेदनशीलता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पूर्ण रूप से सामाजिक सरोकारों से जुड़कर कार्य कर रही हैं।

मुख्य अतिथि के रूप में नीदरलैंड से आई प्रो. पुष्पिता अवस्थी ने अपने वक्तव्य में कहा कि ब्राउस के जेंडर स्टडीज विभाग द्वारा महिला दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित यह कार्यशाला निश्चित तौर पर संदर्भित विषय एक समान दुनिया एक सक्षम दुनिया की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास है। जेंडर संवेदनशीलता के संदर्भ में उन्होंने सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान के समन्वय को संवेदना के स्तर पर ले जाकर समझने को संपूर्णता के रूप में देखने की बात की और कहा कि यह कार्यशाला उस संपूर्णता की एक महत्वपूर्ण कड़ी का हिस्सा प्रतीत होती है। प्रो. रवींद्र रुक्मणी पंडरीनाथ ने इस कार्यशाला का संक्षिप्त परिचय देते हुए कहा कि हम इन दो दिनों में सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों ही स्तरों पर सामाजिक, सांस्कृतिक और रोजमर्रा की व्यवहारिकताओं के उदाहरणों के जरिये हमारे समाज, समुदाय और हमारी अकादमिक संस्थाओं को जेंडर संवेदनशीलता की ओर ले जाने में कुछ न कुछ जरूर कामयाब हो पाएंगे। हम इसके लिए परिचर्चा, लघुफिल्म, समूह गतिविधियों, नाट्य एवं अन्य विभिन्न

आयामों के साथ प्रतिभागियों से जुड़ने, उन्हें समझाने और संवेदनशीलता का पाठ पढ़ाने की कोशिश करेंगे। प्रो. डी. के. वर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि निश्चित तौर पर हम अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर साप्ताहिक कार्यक्रमों की कड़ी में ऐसी कार्यशाला आयोजित कर अपने परिसर को जेंडर संवेदनशील बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य करने की कोशिश कर रहे हैं। ब्राउस की कुलपति प्रो. आशा शुक्ला ने अपने उद्बोधन में कहा कि जेंडर संवेदनशीलता से तात्पर्य स्त्री-पुरुष की खांचेबंदियों से बाहर निकलकर मनुष्यता की दिशा में बढ़ना है। उन्होंने आगे कहा कि जब तक यह पूछा जाता रहेगा कि लड़का हुआ कि लड़की तब तक जेंडर संवेदनशीलता नहीं आ पाएगी। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के एक दिन पहले उन्होंने अपनी बात रखते हुए कहा कि विश्व समुदाय और मानवता के हित में जेंडर समानता और संवेदनशीलता की बहुत जरूरत है। इसके लिए राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लगातार प्रयास जारी हैं। आगे कहा कि महिला सशक्तिकरण की बुनियाद जेंडर संवेदनशीलता और जेंडर समानता से ही मजबूत होगी। सूरीनाम से आए श्री भगवान प्रसाद खुनखुन, प्रो. किशोर जॉन, डॉ. मनीषा सक्सेना, कुसुम त्रिपाठी, डॉ. रश्मि जैन, डॉ. यमिनी राउत सहित विश्वविद्यालय के अधिकारी, कर्मचारी, संकाय सदस्य, विद्यार्थी

प्रतिभागियों के रूप उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. मनोज गुप्ता ने किया।

समाचार पत्रों में कार्यक्रम की खबरे....

परंपराओं को समय के साथ बदलें : प्रो. कुसुम

ब्राउस में दो दिनी राष्ट्रीय सेमिनार का समापन

महू |हमें इस बात को समझने की जरूरत है कि हमारी परंपराएं कब सुरक्षित होती हैं। कब हमारे गले का फंदा बन जाती हैं। सबसे ज्यादा जरूरत है परंपराओं को समय के साथ बदलें। 21वीं सदी में हमें वैज्ञानिक व तार्किक ढंग से विचार करना होगा।

यह बात यहां डॉ. बीआर आंबेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय-ब्राउस द्वारा महिला सशक्तिकरण, परंपराओं के नाम पर कुरीतियां... विषयांतर्गत दो दिनी राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन पर मुख्य अतिथि प्रो. कुसुम कुमारी, प्रतिनिधि कुलपति मुंगेर विश्वविद्यालय ने कही। विशेष अतिथि भगवानप्रसाद खुनखुन सूरीनाम व रामजी यादव थे। यादव ने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था में

ब्राउस में राष्ट्रीय सेमिनार के समापन कार्यक्रम में विचार रखते वक्ता।

स्त्रियों की प्रमुख भूमिका रही है, जो अतुलनीय है। परंपरा और संस्कृति के केंद्र में स्त्री का महत्वपूर्ण स्थान है। जब हम कुप्रथाओं की बात करते हैं, तो नकारात्मक संस्कृति की बात भी आती है और इसके लिए सबल पुरूष की सबसे ज्यादा शिकार महिलाएं होती हैं। उन्होंने कहा जो पढ़ा-लिखा नहीं है वो सुरक्षित नहीं होगा। अध्यक्षता कर रही ब्राउस कुलपति प्रो. आशा शुक्ला ने कहा स्त्रियों की समस्या विश्व में एक जैसी है। उन्होंने संगोष्ठी में शामिल पत्रों व व्याख्यानों को व्यवस्थित कर एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने की बात कही और संगोष्ठी की रिपोर्ट को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं तक पहुंचाने की बात भी कही। प्रो. डीके वर्मा, प्रो. किशोर जॉन, डॉ. मनीषा सक्सेना, डॉ. कुसुम त्रिपाठी, प्रो. पुष्पिता अवस्थी, प्रो. शबीहा हुसैन उपस्थित थे। संचालन डॉ. ज्योति गौर, सत्रवार रिपोर्टिंग डॉ. मनोज गुप्ता ने की व आभार डॉ. रश्मि जैन ने माना।

दैनिक भास्कर महू, 06.03.2020

दैनिक भास्कर | 06-Mar-2020
महू भास्कर Page 1

विश्व महिला दिवस • ब्राउस में परंपराओं के नाम पर कुरीतियां... विषयांतर्गत दो दिनी राष्ट्रीय सेमिनार

स्त्री को सशक्त बनाना है तो बेटियों को सक्षम बनाना होगा : चित्रा मुद्गल

भास्कर संवाददाता | महू

आज भी स्त्री, पुरूष के अहम् के बोझ तले दबी हुई है। सिर्फ एक परिवार या एक गांव या कि एक कस्बे में महिला सशक्तिकरण के संबंध में बेहतर कार्य हो जाने का यह मतलब नहीं कि पूरी तरह से महिला सशक्तिकरण हो गया है। असल में स्त्री ही हमारी पृथ्वी है, स्त्री ही सच्चा प्रेम है, स्त्री ही सहिष्णुता है व वही संवाद है। यदि हमें स्त्री को सशक्त बनाना है, तो सबसे पहले अपने घर में बेटियों को सक्षम करना होगा। स्त्री के लिए सशक्त जैसे शब्द देने से पहले समाज को अपनी सोच बदलनी होगी।

यह बात यहां डॉ. बीआर आंबेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय-ब्राउस में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर महिला सशक्तिकरण : परंपराओं के नाम पर कुरीतियां...विषयांतर्गत पर दो दिनी राष्ट्रीय सेमिनार की मुख्य अतिथि व वक्ता साहित्यकार चित्रा मुद्गल ने कही। उन्होंने बताया विदेशी संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के भारतीय परिदृश्य के संदर्भ में उन्होंने कहा समाज इस समय एक नए संक्रमण काल से गुजर रहा है और परिवार में नए संक्रमण पैदा हो रहे हैं। इसके पीछ भी स्त्रियां ही जिम्मेदार हैं। उन्होंने परिवारों के टूटने के पीछे का कारण उन स्त्रियों का माना है, जो घर पर एक काम वाली बाई तो रख सकती है, लेकिन अपनी सास के साथ ड्राइंग रूम नहीं बांट सकती।

स्त्री से ही समाज का अस्तित्व है

विशेष अतिथि पद्मश्री जनक पलटा ने कहा 1972 से लेकर आज तक गांव से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जेंडर समानता की सिर्फ बातें हो रही हैं। वहीं जेंडर समानता से ज्यादा जरूरी स्त्री-पुरुष को एक साथ एक मंच पर लाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा एक समय में स्त्री से उसके निर्णय लेने की क्षमता को छीन लिया गया था। उन्हें डरा-धमकाकर रखा गया था। आज समय के साथ इस कुरीति को बंद करने की आवश्यकता है। संगोष्ठी की नोट स्पीकर नीदरलैंड से आई प्रो. पुष्पिता अवस्थी ने वैश्विक परिप्रेक्ष्य में कुप्रथाएं, समस्या और समाधान विषय पर कहा स्त्री-पुरुष दोनों एक समान हैं। दोनों को एक जैसा सम्मान देना चाहिए। उन्होंने कहा भारतीय परंपराएं ही भारतीय संस्कृति की जनक हैं। आने वाले समय में भारतीय संस्कृति ही वैश्विक संस्कृति बनेगी। स्त्री से ही समाज का अस्तित्व है। यदि स्त्री को समाज में बराबर का स्थान नहीं मिलेगा, तो एक दिन यह समाज बिखर जाएगा।

स्त्रियों के उत्थान के लिए कार्य होना चाहिए : प्रो. आशा शुक्ला

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. आशा शुक्ला ने कहा महिलाओं का सिर्फ एक दिन नहीं होता, बल्कि पूरे 365 दिन स्त्री के नाम होते हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सभी महिलाएं अच्छी नहीं हैं और सभी पुरुष गलत नहीं हैं। केरल के दलित आंदोलन का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि जिस तरह से वहां के दलित समाज ने ब्लॉउज पहनने के लिए आंदोलन कर समाज में सभी वर्गों की स्त्रियों के सम्मान की लड़ाई लड़ी ठीक वैसे हैं आज हर स्थान पर स्त्रियों के उत्थान के लिए कार्य होना चाहिए। आज के समय में हमें सबसे पहले अपने सामूहिक आचरण को बदलना होगा। विभिन्न समाज में फैली कुरीतियों का खात्मा करना होगा, तभी सही मायनों में महिला सशक्तिकरण माना जाएगा। कार्यक्रम संयोजक कुसुम त्रिपाठी ने भी विचार रखे। संचालन डॉ. रश्मि जैन ने किया व आभार डॉ. मनोज गुप्ता ने माना।

आज भी पुरुष के अहं तले दबी हुई है स्त्री

आंबेडकर विवि में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की शुरुआत, महिलाओं की स्थिति पर हुई बात

महू (नईदुनिया प्रतिनिधि)। नगर के डॉ. बीआर आंबेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यहां महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम के तहत 'परंपराओं के नाम पर कुरीतियां' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि प्रसिद्ध साहित्यकार चित्रा मुद्गल ने कहा कि आज भी स्त्री पुरुष के अहं के बोझ तले दबी हुई है। उन्होंने कहा कि सिर्फ एक परिवार या एक गांव या एक कस्बे में महिला सशक्तिकरण के संबंध में बेहतर कार्य हो जाने का यह मतलब नहीं है कि पूरी तरह से महिला सशक्तिकरण हो गया है। असल में स्त्री ही हमारी पृथ्वी है, स्त्री ही सच्चा प्रेम है, स्त्री ही सहिष्णुता है, वही संवाद है।

महू के विश्वविधालय में मोटिवेशनल स्पीकर पूनम श्रोती को सम्मानित करती हुई विवि की कुलपति डॉ. आशा शुक्ला और समाजसेविका जनक पलटा व अन्य। ● **नईदुनिया**

कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि पदमश्री जनक पलटा ने कहा कि 1972 से लेकर आज तक गांव से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जेंडर समानता की सिर्फ बातें हो रही हैं जबकि जेंडर समानता से ज्यादा जरूरी स्त्री-पुरुष को एक साथ एक मंच पर लाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा एक समय में स्त्री से उसके निर्णय लेने की क्षमता को छीन लिया गया था, उन्हें डरा-धमकाकर रखा गया था इस कुरीति को बंद करने की आवश्यकता है।

संगोष्ठी की नोट स्पीकर नीदरलैंड से आई प्रो. पुष्पिता अवस्थी ने वैश्विक परिप्रेक्ष्य में कुप्रथाएं समस्या और समाधान विषय पर बोलते हुए कहा कि स्त्री-पुरुष दोनों एक समान हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहीं विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. आशा शुक्ला ने कहा कि महिलाओं का सिर्फ एक दिन नहीं होता बल्कि हर दिन स्त्री के नाम होता है। आज हर स्थान पर स्त्रियों के उत्थान के लिए कार्य होना चाहिए। विभिन्न समाज में फैली कुरीतियों का खात्मा करना होगा तभी सही मायनों में महिला सशक्तिकरण माना जाएगा। कार्यक्रम संयोजक कुसुम त्रिपाठी ने भारतीय और वैश्विक समाज में स्त्रियों के प्रति फैली कुरीतियों और कुप्रथाओं पर प्रहार किया। संचालन डॉ. रश्मि जैन ने व आभार डॉ. मनोज गुप्ता ने माना।

नई दुनिया 06.03.2020, पेज नं. 06

महिला सशक्तिकरण की मिशाल **पूनम श्रोति** को सावित्रीबाई फुले महिला सशक्तिकरण सम्मान देते हुए कुलपति प्रो. आशा शुक्ला एवं अतिथि

महिला सशक्तिकरण की बुनियाद जेंडर संवेदनशीलता और जेंडर समानता से मजबूत होगी

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

डॉ.आंबेडकरनगर(महू). जेंडर संवेदनशीलता से तात्पर्य स्त्री-पुरुष की खांचेबंदियों से बाहर निकलकर मनुष्यता की दिशा में बढ़ना है। जब तक यह पूछा जाता रहेगा कि लड़का हुआ कि लड़की तब तक जेंडर संवेदनशीलता नहीं आ पाएगी। विश्व समुदाय और मानवता के हित में जेंडर समानता और संवेदनशीलता की बहुत जरूरत है। महिला सशक्तिकरण की बुनियाद जेंडर संवेदनशीलता और जेंडर समानता से ही मजबूत होगी।

डॉ. बीआर आंबेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में जेंडर संवेदनशीलता-एक समान दुनिया एक सक्षम दुनिया विषय पर हुई राष्ट्रीय संगोष्ठी में यह बात कुलपति प्रो. आशा शुक्ला ने कही। नीदरलैंड से आई प्रो. पुष्पिता अवस्थी ने जेंडर संवेदनशीलता के संदर्भ में सैद्धांतिक और व्यावहारिक ज्ञान के समन्वय को संवेदना के स्तर पर ले जाकर समझने को संपूर्णता के रूप में देखने की बात की।

मुंबई के फार्मेसी विभाग के पूर्व प्रोफेसर प्रो. रवींद्र रुक्मणी पंडरीनाथ ने इस कार्यशाला का संक्षिप्त परिचय देते हुए कहा कि हम इन दो दिनों में सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों ही स्तरों पर सामाजिक, सांस्कृतिक और रोजमर्रा की व्यवहारिकताओं के उदाहरणों के जरिये हमारे समाज, समुदाय और हमारी अकादमिक संस्थाओं को जेंडर संवेदनशीलता की ओर ले जाने में कुछ न कुछ जरूर कामयाब हो पाएंगे। प्रो. डीके वर्मा ने भी विचार रखे। सूरीनाम से आए भगवान प्रसाद खुनखुन, प्रो. किशोर जॉन, डॉ. मनीषा सक्सेना, कुसुम त्रिपाठी, डॉ. रश्मि जैन, डॉ. यमिनी राउत सहित विश्वविद्यालय के अधिकारी, कर्मचारी, संकाय सदस्य, विद्यार्थी प्रतिभागियों के रूप उपस्थित रहे। संचालन डॉ. मनोज गुप्ता ने किया।

पत्रिका 08.03.2020/महू

जेंडर संवेदनशीलता: एक समान दुनिया एक सक्षम दुनिया कार्यशाला का उद्घाटन 07/03/2020

कुछ अन्य छायाचित्र

प्रो. सबीहा हुसैन

प्रो. डी. वर्मा

प्रो. विभूति पटेल

प्रो. निशा शेण्डे

श्री भगवान प्रसाद खुनखुन

डॉ. सुप्रिया पाठक

श्री शरद जायसवाल

चंदा असानी

डॉ. सतीश पावड़े

विश्वविद्यालय द्वारा प्रो. कुसुम कुमारी को सम्मानित करते हुए

समानांतर सत्र में उपस्थित शोधार्थी

कुसुम त्रिपाठी

डॉ. मनोज कुमार गुप्ता

डॉ. रश्मि जैन

प्रो. सिराज बालसारा प्रभू, डॉ. धम्मासंगिनी

स्वातीजा परांजपे

सेमिनार हॉल